14. सुल्तानों का शासन जमा

सुल्तान के गुलाम अधिकारी

मोहम्मद ग़ोरी भारत के उत्तरी हिस्सों पर अपना राज्य बना चुका था। उसने चौहाण, गहड़वाल, सेन, चन्देल आदि कई वंशों के राजाओं को हरा कर अपना राज्य बनाया था। वह खुद ग़ोर में रहता था और भारत में उसके राज्य के अलग-अलग प्रान्तों में उसके अधिकारी शासन चलाते थे। ये अधिकारी मोहम्मद ग़ोरी के गुलाम थे क्योंकि ग़ोरी ने इन्हें खरीद रखा था।

गुलाम राज्य के अधिकारी थे। इस बात से तुम्हें हैरानी हो सकती है। पर उन दिनों यह प्रथा थी। तुर्किस्तान के युवकों को खरीद कर उन्हें युद्ध और प्रशासन के काम में प्रशिक्षण देकर सुल्तानों को बेचा जाता था। इसलिए वे गुलाम कहलाते थे। पर किसी सुल्तान की सेवा में आने पर, योग्य और होनहार गुलामों को ऊंचे और ज़िम्मेदारी के पद भी सौंपे जाते थे और इसके बदले उन्हें ऊंचा वेतन मिलता था। सुल्तान मोहम्मद ग़ोरी की सेवा में भी ऐसे कई गुलाम थे और भारत में उसके राज्य का शासन चलाते थे।

सन् 1206 में जब मोहम्मद की मृत्यु हुई उसका एक महत्वपूर्ण गुलाम अधिकारी था कुतुबुद्दीन ऐबक। उसने ग़ोर के राज्य से अपना संबंध तोड़ दिया और भारत में ही तुर्क राज्य को मज़बूत बनाया। इस राज्य का सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक खुद बना। यह राज्य अब देहली सल्तनत कहलाया क्योंकि इसकी राजधानी देहली थी।

अपने गुलामों को अधिकारी बनाने से राजा को क्या फायदे हो सकते थे, कक्षा में चर्चा करो।

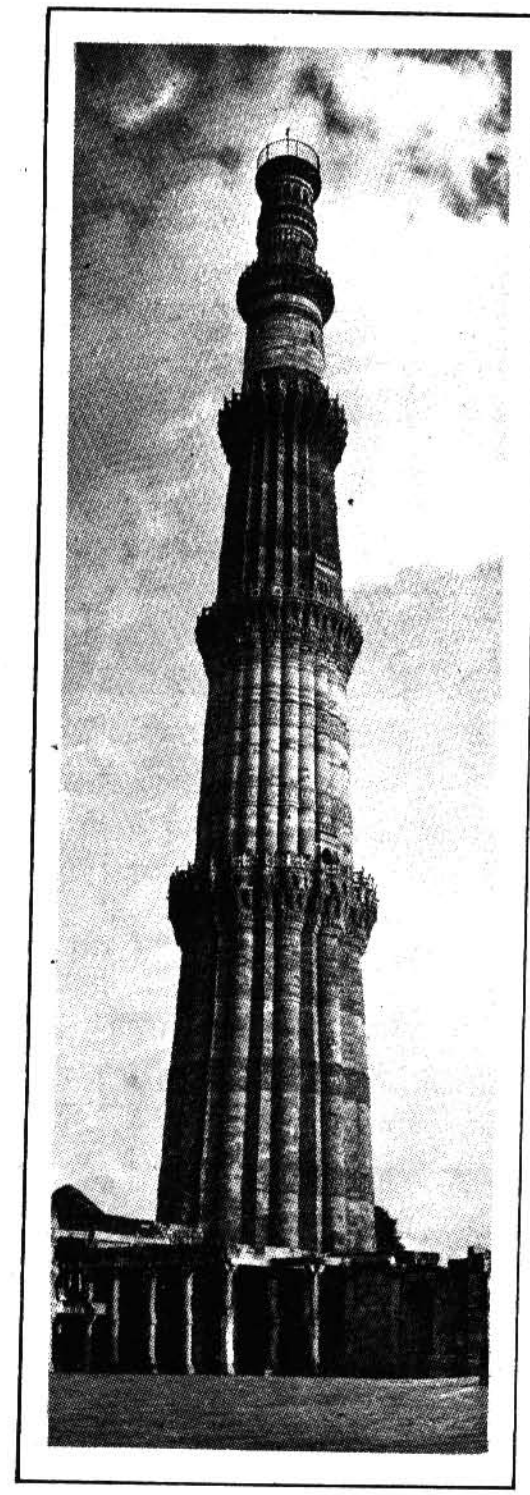

कुतुब मीनार : देहली में कुतुबुद्दीन ऐबक ने यह मीनार बनवाया

देहली सल्तनत का क्षेत्र फैला

ऐबक के बाद आने वाले सुल्तानों ने देहली सल्तनत का राज्य दूसरी जगहों में फैलाया। देहली के प्रमुख सुल्तान ये थे– इल्तुतमिश, रज़िया बेगम, बल्बन, अलाउद्दीन खलजी, मोहम्मद तुग़लक, फिरुज़शाह। खासकर अलाउद्दीन खलजी ने कई नए राज्यों को जीतकर सल्तनत के अधीन किया। उसकी सेनाओं ने देवगिरी, द्वारसमुद्र और मदुरई के राजाओं को हराकर उनके राज्य का बहुत धन लूट लिया। अलाउद्दीन ने राजस्थान और गुजरात के कई क्षेत्रों को भी अपने अधीन कर लिया।

इस तरह इन सुल्तानों के प्रयास से देहली सल्तनत की हुकूमत कहां से कहां तक फैल गई यह तुम सन् 1334 के नक्शे में देखो। सन् 1207 में सल्तनत का राज्य कहां तक था यह तुम पिछले नक्शे में देख चुके हो।

मोहम्मद गोरी के बाद जो क्षेत्र सल्तनत के अधीन किए गए उन्हें नक्शा 1 में पहचान कर रंगो।

इस नक्शे की तुलना सन् 1000 के राजवंशों के नक्शे से भी करो। उस समय भारत में कितने सारे छोटे-छोटे राजवंश थे। अब वे तुर्कों से हार गए थे और दिल्ली सल्तनत के अधीन थे।

सुल्तान और हारे हुए राजाओं का रिश्ता

हारने के बाद इन पुराने राजाओं का क्या हुआ होगा? तुम 'राजवंश का बनना' और 'उत्तर भारत के गांव' वाले पाठों में इन ताकतवर लोगों के बारे में बहुत सी बातें पढ़ चुके हो। कैसे वे गांव व शहरों का 'भोग' करते थे, लोगों से तरह-तरह के कर वसूल करते थे, लोगों से अपने लिए बेगार करवाते थे, अपने किले, महल व मन्दिर बनवाते थे, अपनी सेना खड़ी करते थे। गांव व शहरों में उनका कितना दबदबा और रौब था। पर अब उन पर देहली के सुल्तानों का शासन था।

वास्तव में सुल्तानों के सामने हमेशा यह समस्या रही कि इन हारे हुए राजवंशों और सामंतों से कैसा व्यवहार करें। सुल्तान चाहते तो थे कि इन राजाओं को हटाकर पूरे क्षेत्र पर खुद शासन चलाएं। मगर तुम तो समझते हो कि ऐसा करने में क्या-क्या कठिनाईयां थी। सबसे कठिन बात तो थी दूर-दूर के नये क्षेत्रों के शासन का प्रबंध करना, वहां अपने अधिकारी व सैनिक नियुक्त करना और खुद वहां के लोगों से कर इकट्ठा करना। तुर्क लोग तो ईरान और अफगानिस्तान से आये थे। वे न तो यहां की भाषा जानते थे न यहां के रीति-रिवाज़, और न ही वे यहां की शासन व्यवस्था के बारे में समझते थे। इस कारण शुरू में उन्हें यहां शासन प्रबंध करने में कठिनाईयां आयीं।

इसके लिये उन्होंने शुरू में एक उपाय सोचा। उन्होंने तय कर लिया कि वे हर हारे हुए राजा से कितना कर लेना चाहते हैं। यह राशि तय करने पर वे हारे हुये राय-राणाओं से कहते–"तुम्हें अपने यहां के लोगों से इतना कर इकट्ठा करके हमें देते रहना होगा। बाकी तुम जैसे संभालते थे वैसे संभाल सकते हो।"

(तुम्हें याद होगा कि राय, राणा, ठाकुर, रावत आदि राजपूत परिवारों के भोगपतियों की उपाधियां थीं।)

क्या पुराने समय के राजा भी अपने सामंतों से ऐसा ही कहते थे?

अक्तादार

सुल्तानों ने कर वसूल करने का इन्तज़ाम तो कर लिया पर अपनी सुरक्षा के लिए और राय राणाओं पर निगरानी रखने के लिये भी कोई उपाय करना ज़रूरी था। इसके लिए सुल्तानों ने अपनी सल्तनत (या राज्य) को कुछ

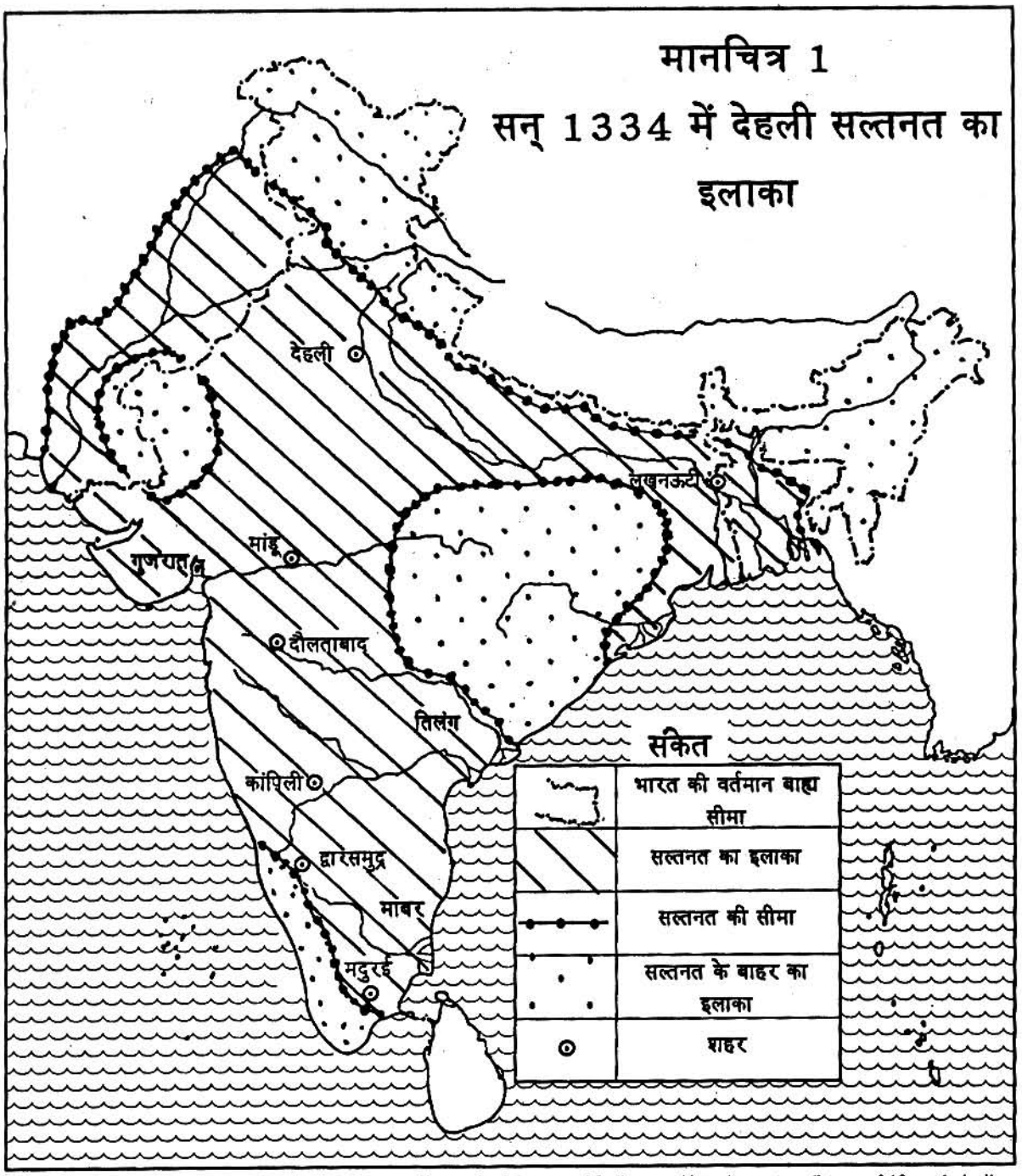

Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

© Govt of India copyright.

पैमाना: 1 से. मी. = 200 कि.मी.

प्रांतों में बांटा। वे प्रांतों को 'अक्ता' कहते थे। हर अक्ते में वे अपने एक ज़िम्मेदार सेनापति को नियुक्त करते थे, जो वहां के बड़े शहर में रहता था। उसे 'अक्तादार' कहा जाता था।

अक्तादार के पास अपनी सेना होती थी और प्रशासन चलाने के लिए अधिकारी होते थे। अक्तादार इनकी सहायता से राज्य की रक्षा करते थे और राय राणाओं से कर वसूल करते थे। अपने अक्ते से इकट्ठे किए गए कर से ही वे अपना, अपने अधिकारियों का और अपने सैनिकों का खर्चा चलाते थे। इस खर्चे के ऊपर जो कर बचता था उसे अक्तादार सुल्तान को भेज देते थे।

पर हारे हुए राय-राणा अक्सर सोचते थे "मैं क्यों अपने यहां का इतना सारा कर इकट्ठा करके तुर्कों को दूं? मैं पहले की तरह खुद ही क्यों न रख लूं? जब वे आकर मांगेंगे तब देखा जायेगा।"

मौका देखकर राय-राणा आदि कर देना बंद कर देते थे। फिर सुल्तान या उसके अक्तादारों को ऐसे विद्रोही राजाओं व राणाओं पर हमला करके ज़बरदस्ती उनसे कर वसूल करना पड़ता था।

अक्तादारों के कुछ काम बताओ। सल्तनत में एक अक्तादार होता होगा या कई?

इस तरह लगभग सौ साल बीत गये। इतने समय में तुर्क लोग यहां के लोगों की भाषा, तौर-तरीकों और खेती-बाड़ी जैसी बातें समझने लगे। अब तुर्क सुल्तानों को लगने लगा कि राय-राणाओं की जगह वे खुद गांव-गांव से कर इकट्ठा करवा सकते हैं।

अलाउद्दीन खलजी ने कर बदले

इसी समय अलाउद्दीन खलजी सुल्तान बना। अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि उसके राज्य में कर इकट्ठा करने का एक नया तरीका लागू होगा। तुम्हें याद होगा– भोगपति गांव के लोगों से कई मौकों पर तरह-तरह के कर वसूल करते थे।

आमिल कर वसूल करते हुए

भोगपतियों द्वारा वसूल किए गए करों की सूची को एक बार फिर पढ़ो। ('उत्तर भारत के गांव' पाठ में)

अलाउद्दीन ने आदेश दिया कि अब इतने सारे अलग-अलग कर किसानों से नहीं लिए जायेंगे। किसानों से केवल तीन तरह के कर लिए जायेंगे– भूमि पर कर, घर पर कर और मवेशियों पर कर। इनमें सबसे प्रमुख कर था भूमि कर। सुल्तान ने पटवारियों की मदद से हर गांव की ज़मीन नाप कर हिसाब लगवाया कि प्रत्येक गांव में आम तौर पर कितनी फसल होती है। उसने तय किया कि हर गांव से आधी फसल सुल्तान को लगान के रूप में दी जाएगी। किसान जो उगाएगा उसका आधा सुल्तान को देगा। अब राय-राणाओं के ज़माने की तरह किसानों से मौके-बे-मौके नाना प्रकार के अनगिनत कर नहीं वसूले जायेंगे। अब फसल के समय किसानों को स्पष्ट रूप से आधी उपज सुल्तान को देनी होगी।

आमिल

इस तरह अलाउद्दीन ने कई छोटे-छोटे करों को मिलाकर एक बड़ा कर बना दिया, भूमि कर। इस कर को गांव-गांव से इकट्ठा करने के लिए उसने अपने अधिकारी नियुक्त किए। इन अधिकारियों को आमिल कहा जाता था। अब सुल्तान ने राय-राणाओं से कर वसूल करना छोड़ दिया। उसके आमिल सीधे गांवों में जा कर किसानों से कर वसूल करने लगे। राय-राणाओं को अब यह छूट नहीं थी कि वे पहले की तरह लोगों से कर वसूल करें और उसका एक बंधा हुआ हिस्सा ही सुल्तान को भेजें।

अलाउद्दीन की नीति बताने वाले दो सबसे महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।

कई छोटे-छोटे करों के बजाये एक बड़ा कर वसूल करने में सुल्तान के अधिकारियों को क्या सुविधा हुई होगी? किसानों को इस बात से फ़ायदा हुआ होगा या नुक्सान? राय-राणाओं पर अलाउद्दीन की नीति का क्या असर पड़ा होगा?

मुखिया का काम बदला

अलाउद्दीन के सुल्तान बनने से पहले गांव के मुखिया गांव वालों से तरह-तरह के कर इकट्ठा करके राय-राणाओं को देते थे। इस काम के बदले मुखिया किसानों से कुछ कर अलग से अपने लिए भी वसूल कर लेते थे और वे अपनी ज़मीन पर भी राय-राणाओं को कोई कर नहीं देते थे।

अलाउद्दीन ने मुखियाओं की यह स्थिति नहीं मानी। सुल्तान ने बड़ी सख्ती से आदेश दिया कि खेत के हर टुकड़े पर कर वसूल किया जाएगा चाहे वो छोटे से छोटे किसान का हो या गांव के मुखिया का।

अलाउद्दीन को यह बात भी ठीक नहीं लगी कि किसानों से सरकार जो कर लेती है उसके अलावा गांव के मुखिया अपने लिए भी अलग से कुछ वसूल करें। उसने मुखियाओं को सख्ती से आदेश दिया कि वे किसानों से कोई अतिरिक्त वसूली नहीं करेंगे। ऐसा करने का अब उनके पास कोई कारण नहीं रहा था क्योंकि अब मुखिया की जगह सुल्तान का आमिल (यानी अधिकारी) किसानों से कर जमा करने का काम करने लगा था। मुखिया सिर्फ आमिल की मदद कर सकते थे।

तुम्हें क्या लगता है– अलाउद्दीन की इन नीतियों से गांव के मुखियाओं का रौब व उनकी ताक़त पहले के दिनों से कुछ कम हुई होगी?

वो बातें गिनाओ जो अलाउद्दीन के समय में राय-राणा और मुखिया नहीं कर सकते थे।

चौधरी और ज़मींदार बने

अलाउद्दीन और उसके बाद के सुल्तान अपने राज्य के खर्च को पूरा करने के लिए और अपने राज्य को मज़बूत बनाने के लिए बहुत सख्ती और सावधानी से लगान जमा करवाने लगे थे। वो इस बात का बहुत ध्यान रखने लगे थे कि कर वसूली में कोई कमी न हो। जो किसान कर नहीं देते थे या जो आमिल कर की चोरी करते थे उन्हें कठोर सज़ा दी जाती थी।

पर इस काम में सुल्तानों को स्थानीय लोगों की मदद की ज़रूरत पड़ती रही। अपनी बात गांव वालों को बताने व समझाने के लिए और गांवों की स्थिति के बारे में जानने के लिए सुल्तान गांवों के प्रमुख परिवारों की मदद लेते रहे।

ये प्रमुख परिवार कौन से थे? इनमें से बहुत से परिवार तो वो थे जो पुराने समय में राय-राणा या मुखिया हुआ करते थे। सुल्तान के आमिल कर वसूली के काम में इन प्रमुख लोगों से सहायता लिया करते थे। इस सहायता के बदले में उन्हें कर का एक छोटा सा निश्चित हिस्सा दे दिया जाता था। इन प्रमुख लोगों को चौधरी या ज़मींदार कहा जाने लगा।

पुराने समय के कई राय, राणा, ठाकुर और मुखिया सुल्तानों के समय में चौधरी या ज़मींदार बन गए। सुल्तानों

ज़मींदार और गांव वाले

के अधीन होने से उनके पास राय-राणाओं जैसी ताकत और शान तो नहीं रही। पर फिर भी वे सुल्तानों के लिए महत्वपूर्ण लोग बने रहे और सुल्तान उनकी मदद लेते रहे।

देहली सल्तनत का टूटना

इन सब समस्याओं से जूझते हुए देहली से कई सुल्तान शासन करते रहे। सन् 1388 में सुल्तान फिरुजशाह तुग़लक की मृत्यु के बाद देहली सल्तनत का विशाल राज्य कई छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। इनमें अलग अलग सुल्तान शासन करने लगे।

ऐसा ही एक राज्य मांडू में बना। मांडू नाम की जगह इन्दौर के पास है। वहां माण्डू के सुल्तानों के बहुत सुन्दर महल, मस्जिद और किले हैं। मांडू का एक प्रसिद्ध सुल्तान था होशंगशाह। सुल्तान होशंगशाह के नाम पर ही होशंगाबाद शहर का नाम पड़ा है।

अभ्यास के प्रश्न

1. अलाउद्दीन ने सल्तनत का राज्य कहां फैलाया– उत्तर भारत में/दक्षिण भारत में/पूर्व भारत में/पश्चिम भारत में।
2. सल्तनत शासन के शुरू-शुरू में गांवों से कर कौन इकट्ठा करता था– अक्तादार/राय-राणा। अलाउद्दीन के नियम के बाद गांव से कर कौन इकट्ठा करने लगा– आमिल/राय-राणा।
3. सामन्तों के समय में किसानों को किस तरह से कर देने पड़ते थे? अलाउद्दीन के नियम के बाद उन्हें किस तरह से कर देने पड़े?
4. सामन्तों के समय में गांव के मुखियाओं की स्थिति क्या थी? अलाउद्दीन के समय से उनकी स्थिति क्या हो गई?
5. किसानों से इकट्ठे किए गए कर का एक छोटा सा निश्चित हिस्सा किसे दिया जाता था– मुखिया को या चौधरी व ज़मींदार को? उन्हें यह हिस्सा कौन देता था और किसलिए?